समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सामाजिक संरचना और स्तरीकरण का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). आपके परिवार में लिंग (लड़का/लड़की) के आधार पर काम का बँटवारा क्या 'सामाजिक संरचना' का हिस्सा है?

उत्तर – हाँ, यह सामाजिक संरचना का एक पहलू है।

प्रश्न 2 (आसान). क्या किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति हमेशा उसके 'सामाजिक स्तरीकरण' को तय करती है?

उत्तर – नहीं, हमेशा नहीं। जाति, धर्म, शिक्षा जैसे कई कारक भी इसमें शामिल होते हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). भारत में 'जाति व्यवस्था' सामाजिक संरचना और स्तरीकरण का एक महत्वपूर्ण उदाहरण कैसे है?

उत्तर – जाति व्यवस्था समाज को विभिन्न समूहों में बाँटती है, जहाँ प्रत्येक समूह का अपना एक निश्चित स्थान होता है। यह स्थान उनके पेशे, सामाजिक संबंधों और संसाधनों तक पहुँच को प्रभावित करता है, जिससे समाज में ऊँच-नीच का एक स्थायी क्रम बनता है।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या व्यक्ति सामाजिक संरचना और स्तरीकरण से पूरी तरह बंधा होता है, या वह इसे बदल भी सकता है? उदाहरण देकर समझाओ।

उत्तर – व्यक्ति सामाजिक संरचना से प्रभावित तो होता है, लेकिन वह इसे बदल भी सकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा प्राप्त करके या सामाजिक आंदोलनों में भाग लेकर लोग अपनी और अपने समुदाय की स्थिति को सुधार सकते हैं। ज्योतिबा फुले और डॉ. अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने जातिगत स्तरीकरण को चुनौती देकर समाज में बड़ा बदलाव लाने का काम किया।

» समाज और व्यक्ति के द्वंद्वात्मक संबंध

प्रश्न 5 (आसान). समाज के कौन से नियम आपके स्कूल में आपको कुछ खास तरीके से बर्ताव करने पर मजबूर करते हैं?

उत्तर – स्कूल ड्रेस पहनना, क्लास में शांत रहना, बड़ों का सम्मान करना।

प्रश्न 6 (आसान). क्या आप कोई ऐसा काम करते हैं जो आपके परिवार की पुरानी सोच को थोड़ा बदलता है?

उत्तर – हाँ, जैसे लड़कियों का घर से बाहर जाकर पढ़ना या नौकरी करना, परिवार की पुरानी सोच में बदलाव ला रहा है।

प्रश्न 7 (मध्यम). C. Wright Mills की 'sociological imagination' का क्या मतलब है? एक उदाहरण देकर समझाओ।

उत्तर – इसका मतलब है कि अपनी निजी समस्याओं को बड़े 'social issues' से जोड़कर देखना। जैसे, अगर एक व्यक्ति बेरोज़गार है, तो यह सिर्फ उसकी समस्या नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में नौकरी की कमी का बड़ा 'issue' है।

प्रश्न 8 (कठिन). किस हद तक व्यक्ति सामाजिक संरचना से 'bound' होता है और किस हद तक वह 'free' होता है? 'family structure' का उदाहरण लेकर समझाओ।

उत्तर – एक परिवार की संरचना, जैसे बड़े-बुज़ुर्गों का सम्मान करना या कुछ रीति-रिवाज मानना, व्यक्ति को 'bound' करती है। पर 'individual member' अपनी पसंद से 'career' चुन सकता है, शादी के लिए 'partner' चुन सकता है, या 'family tradition' में छोटे-मोटे बदलाव ला सकता है, जसिसे वह 'free' होता है। यह 'balance' ही 'dialectical relationship' है।

» सामाजिक संरचना की प्रकृति

प्रश्न 9 (आसान). हमारे विद्यालय में कौन सी 'नियमितता' हर दिन होती है?

उत्तर – सुबह की प्रार्थना सभा और कक्षाओं का तय समय पर लगना।

प्रश्न 10 (आसान). क्या आप सड़क पर गाड़ी चलाने के कुछ 'पैटर्न' बता सकते हैं?
उत्तर – हाँ, सब लोग बाईं ओर चलते हैं, लाल बत्ती पर रुकते हैं।

प्रश्न 11 (मध्यम). समाज में 'संस्थाओं' का निर्माण कैसे होता है? एक उदाहरण दें।
उत्तर – जब मानवीय क्रियाएँ और संबंध लगातार एक ही तरीके से दोहराए जाते हैं, तो वे संस्थाओं का रूप ले लेते हैं। जैसे, विवाह की प्रथा लगातार दोहराए जाने वाले रीति-रिवाजों और अपेक्षाओं से एक संस्था बनती है।

प्रश्न 12 (कठिन). समाज की संरचना को 'इमारत' से तुलना क्यों की जाती है, और यह तुलना कहाँ तक सही नहीं है?
उत्तर – इमारत से तुलना इसलिए की जाती है क्योंकि जैसे इमारत में दीवारें, छत, फर्श मिलकर एक ढांचा बनाते हैं, वैसे ही समाज भी नियमित संबंधों और क्रियाओं से बनता है। लेकिन यह तुलना पूरी तरह सही नहीं है क्योंकि इमारत स्थिर होती है, जबकि सामाजिक संरचना 'मानवीय क्रियाओं और संबंधों' से बनती है, जो लगातार बदलते रहते हैं और उन्हें हम खुद ही बनाते व पुनर्निर्मित करते हैं।

» दुर्खीम और मार्क्स के विचार में सामाजिक संरचना

प्रश्न 13 (आसान). दुर्खीम के अनुसार समाज व्यक्ति पर क्या लगाता है?
उत्तर – सामाजिक प्रतिबंध (Social constraint)

प्रश्न 14 (आसान). मार्क्स के अनुसार क्या मनुष्य इतिहास अपनी पसंद की शर्तों पर बनाता है?
उत्तर – नहीं, ऐतिहासिक-संरचनात्मक बाध्यताओं के भीतर।

प्रश्न 15 (मध्यम). क्या समाज दुर्खीम के लिए एक आंतरिक या बाह्य शक्ति है? स्पष्ट करें।
उत्तर – समाज दुर्खीम के लिए एक 'बाह्य' शक्ति है। यह व्यक्ति से स्वतंत्र रूप से मौजूद है और बाहर से व्यक्ति की क्रियाओं पर दबाव डालता है।

प्रश्न 16 (कठिन). दुर्खीम और मार्क्स, दोनों ही सामाजिक संरचना की बाध्यता पर बल देते हैं। फिर भी उनके विचारों में मनुष्य के 'एजेंसी' (यानी अपनी पसंद से काम करने की शक्ति) को लेकर क्या सूक्ष्म अंतर है?
उत्तर – दुर्खीम के लिए, मनुष्य की 'एजेंसी' काफी हद तक समाज के प्रतिबंधों से सीमित होती है; समाज व्यक्ति पर प्रभुत्व रखता है। मार्क्स भी बाध्यताओं को स्वीकार करते हैं, पर वे मानते हैं कि इन बाध्यताओं के भीतर भी मनुष्य में 'इतिहास बनाने' और संरचना को बदलने की सृजनात्मक क्षमता होती है, भले ही वह अपनी चुनी हुई शर्तों पर न हो।

» सामाजिक स्तरीकरण: अवधारणा और आयाम

प्रश्न 17 (आसान). सामाजिक स्तरीकरण का सबसे बुनियादी मतलब क्या है?
उत्तर – समाज में समूहों के बीच संरचनात्मक असमानताएँ।

प्रश्न 18 (आसान). क्या सामाजिक स्तरीकरण सिर्फ़ व्यक्तिगत असमानता है?
उत्तर – नहीं, यह समाज की संरचना का हिस्सा है, व्यक्तिगत नहीं।

प्रश्न 19 (मध्यम). सामाजिक स्तरीकरण किन 'पुरस्कारों' तक पहुँच को प्रभावित करता है?
उत्तर – भौतिक (जैसे पैसा, संपत्ति) और प्रतीकात्मक (जैसे मान-सम्मान, इज्ज़त) पुरस्कारों तक।

प्रश्न 20 (कठिन). समाज में सामाजिक स्तरीकरण 'पीढ़ी दर पीढ़ी' कैसे चलता रहता है?
उत्तर – उच्च स्थिति वाले समूह अपनी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति और संसाधनों को अपनी अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं, जिससे यह व्यवस्था बनी रहती है।

» लाभों के प्रकार और सामाजिक प्रक्रियाओं पर उनका प्रभाव

प्रश्न 21 (आसान). निम्नलिखित में से कौन 'जीवन अवसर' का एक प्रकार है: क) पैसा ख) अच्छी शिक्षा ग) मान-सम्मान?
उत्तर – ख) अच्छी शिक्षा

प्रश्न 22 (आसान). 'राजनैतिक प्रभाव' का अर्थ है: क) दोस्तों से मदद ख) निर्णय लेने की शक्ति ग) खेल में जीत?
उत्तर – ख) निर्णय लेने की शक्ति

प्रश्न 23 (मध्यम). सामाजिक स्तरीकरण कैसे 'सामाजिक प्रस्थिति' के वितरण को प्रभावित करता है? एक उदाहरण दें।
उत्तर – सामाजिक स्तरीकरण के कारण कुछ समूहों को समाज में जन्म से ही अधिक मान-सम्मान मिलता है, जबकि अन्य को कम। जैसे, जाति व्यवस्था में उच्च जाति के व्यक्ति को परंपरागत रूप से अधिक 'सामाजिक प्रस्थिति' मिलती है।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या तीनों प्रकार के लाभ - जीवन अवसर, सामाजिक प्रस्थिति और राजनैतिक प्रभाव - हमेशा एक साथ मिलते हैं या वे अलग-अलग भी हो सकते हैं? विस्तार से समझाएँ।
उत्तर – ये लाभ अक्सर एक साथ जुड़े होते हैं (जैसे अमीर को अच्छी शिक्षा और प्रभाव दोनों मिलते हैं), लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। एक गरीब व्यक्ति अपनी मेहनत से 'सामाजिक प्रस्थिति' कमा सकता है, या एक प्रभावशाली व्यक्ति के पास बहुत पैसा न हो तब भी 'राजनैतिक प्रभाव' हो सकता है। पर ज़्यादातर ये एक-दूसरे को मज़बूत करते हैं।

» समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य बनाम सामान्य ज्ञान

प्रश्न 25 (आसान). अगर कोई व्यक्ति उदास रहता है, तो सामान्य ज्ञान क्या कहेगा?
उत्तर – वह अकेला महसूस कर रहा है या उसका मन खराब है।

प्रश्न 26 (आसान). अगर कोई लड़का क्रिकेट खेलता है, तो सामान्य ज्ञान क्या कहेगा?
उत्तर – उसे क्रिकेट पसंद है।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर किसी गाँव में महिलाओं को बाहर जाकर काम करने की अनुमति नहीं है, तो सामान्य ज्ञान इसे कैसे समझाएगा? और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य क्या देखेगा?
उत्तर – सामान्य ज्ञान कहेगा 'यह तो उनकी परंपरा है' या 'घर के काम ज्यादा होते हैं'। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 'पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक नियंत्रण' को देखेगा।

प्रश्न 28 (कठिन). बड़े शहरों में लोग अकेले रहना क्यों पसंद करते हैं? इस पर समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से टिप्पणी करें।
उत्तर – समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य यह देखेगा कि 'तेजी से शहरीकरण, पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का टूटना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बढ़ता जोर, और आर्थिक आत्मनिर्भरता' जैसे सामाजिक कारक लोगों को अकेले रहने के लिए प्रेरित करते हैं, न कि सिर्फ़ 'उनकी पसंद'।

» सहयोग और श्रम विभाजन (दुर्खीम का दृष्टिकोण)

प्रश्न 29 (आसान). दुर्खीम के अनुसार, 'यांत्रिक एकता' किस प्रकार के समाजों में ज़्यादा देखी जाती थी?
उत्तर – पुराने या सरल समाजों में, जहाँ कम श्रम-विभाजन होता था।

प्रश्न 30 (आसान). 'Organic Solidarity' का मुख्य आधार क्या है?
उत्तर – श्रम विभाजन और सदस्यों के बीच अन्योन्याश्रितता।

प्रश्न 31 (मध्यम). अपने गाँव या शहर के किसी एक 'सरकारी दफ़्तर' (जैसे, तहसील या नगर निगम) का उदाहरण लेकर दुर्खीम की 'सावयवी एकता' को समझाएँ।
उत्तर – एक सरकारी दफ़्तर में कई विभाग होते हैं, जैसे राजस्व, लाइसेंस, जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र, आदि। हर विभाग का काम अलग और विशेषज्ञता वाला होता है। ये सभी विभाग एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं (जैसे, एक प्रमाण पत्र बनाने के लिए कई विभागों की मंज़ूरी चाहिए)। यह उच्च श्रम-विभाजन और अन्योन्याश्रितता दिखाता है, इसलिए यह 'सावयवी एकता' का उदाहरण है।

प्रश्न 32 (कठिन). क्या आधुनिक समाज में 'यांत्रिक एकता' के कोई अवशेष (remnants) मिल सकते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
उत्तर – हाँ, आधुनिक समाज में भी 'यांत्रिक एकता' के अवशेष मिल सकते हैं, खासकर छोटे, घनिष्ठ समुदायों या समूहों में जहाँ सदस्य समान विचारों और जीवनशैली को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, एक ही पेशे से जुड़े लोगों का एक बहुत छोटा और पारंपरिक समुदाय (जैसे, एक ही कारीगरी करने वाले कुछ परिवार), जहाँ सब एक जैसा काम करते हैं और उनकी सामाजिक सोच भी मिलती-जुलती है। या किसी धार्मिक समूह के लोग जिनकी मान्यताएँ और रहन-सहन एक जैसा हो। यहाँ

श्रम विभाजन कम होता है और समानता ही उनकी एकता का आधार होती है।

» सहयोग और चेतना (मार्क्स का दृष्टिकोण)

प्रश्न 33 (आसान). मार्क्स के अनुसार, मनुष्य और पशु में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – मनुष्य अपनी चेतना के कारण अपनी दुनिया को सक्रिय रूप से बदलता है, जबकि पशु केवल अपनी तत्काल ज़रूरतें पूरी करते हैं।

प्रश्न 34 (आसान). 'बलात् सहयोग' (coercive cooperation) का क्या अर्थ है?
उत्तर – यह वह सहयोग है जहाँ व्यक्ति अपनी मर्ज़ी से नहीं, बल्कि अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मजबूरी में काम करता है।

प्रश्न 35 (मध्यम). मार्क्स के 'अलगाव' (alienation) की अवधारणा को संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – अलगाव वह स्थिति है जहाँ मज़दूर अपने उत्पाद, अपनी श्रम प्रक्रिया, अपने साथी मज़दूरों और अपनी मानवीय सारभूत प्रकृति से कटु महसूस करता है क्योंकि उसका उन पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

प्रश्न 36 (कठिन). मार्क्स के विचारों के अनुसार, वर्ग-विद्यमान समाज में 'सहयोग' और 'अलगाव' एक दूसरे से कैसे जुड़े हैं?
उत्तर – वर्ग-विद्यमान समाज में, सहयोग अक्सर 'बलात्' होता है क्योंकि मज़दूर अपनी आजीविका के लिए मालिक पर निर्भर होता है। यही बलात् सहयोग अक्सर मज़दूर को अपने श्रम और उसके फल से 'अलगाव' की ओर ले जाता है, जहाँ वह अपनी मेहनत के मालिक नहीं होता और अपने काम में संतुष्टि नहीं पाता।

» प्रतियोगिता: अवधारणा और व्यवहार

प्रश्न 37 (आसान). प्रतियोगिता एक स्वाभाविक वृत्ति क्यों नहीं है?
उत्तर – क्योंकि यह जन्म से नहीं होती, बल्कि सामाजिक परिस्थितियों में विकसित होती है।

प्रश्न 38 (आसान). किन समाजों में प्रतियोगिता अधिक प्रभावी हुई?
उत्तर – पूंजीवादी समाजों में।

प्रश्न 39 (मध्यम). आधुनिक पूंजीवादी समाज में किन दो विचारों का विकास प्रतियोगिता के साथ हुआ?
उत्तर – व्यक्तिवाद और कार्यकुशलता।

प्रश्न 40 (कठिन). अफ्रीका के स्कूल टीचर के उदाहरण से प्रतियोगिता के किस पहलू पर प्रकाश पड़ता है?
उत्तर – यह दिखाता है कि प्रतियोगिता हर समाज या संस्कृति में 'आनंद' का समान विचार नहीं रखती, बल्कि कुछ समाजों में 'सहयोग' को अधिक महत्व दिया जाता है।

» संघर्ष: हितों में टकराव और इसके आधार

प्रश्न 41 (आसान). क्या एक घर में TV का रिमोट लेने के लिए दो भाइयों में होने वाला झगड़ा एक 'संघर्ष' है? हाँ या नहीं?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 42 (आसान). अगर दो राजनीतिक दल एक ही चुनाव क्षेत्र से लड़ रहे हैं, तो क्या उनके बीच 'हितों का टकराव' होता है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 43 (मध्यम). एक फ़ैक्टरी में मज़दूर ज़्यादा वेतन की माँग कर रहे हैं, जबकि मालिक ज़्यादा मुनाफा कमाना चाहता है। यहाँ 'संघर्ष का आधार' और 'कारण' क्या है?
उत्तर – संघर्ष का आधार 'वर्ग' (मजदूर वर्ग बनाम मालिक वर्ग) है, और कारण 'आर्थिक हित' (वेतन बनाम मुनाफा) तथा 'संसाधनों का वितरण' है।

प्रश्न 44 (कठिन). नदी के पानी के बँटवारे को लेकर दो राज्यों के बीच 'संघर्ष' किस आधार पर और किस कारण से होता है? विस्तार से समझाओ।
उत्तर – यह संघर्ष मुख्य रूप से 'क्षेत्रीय' (regional) या 'नृजातीयता' (ethnicity) के आधार पर हो सकता है, जहाँ प्रत्येक राज्य अपने क्षेत्र के लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। इसका प्रमुख कारण 'प्राकृतिक संसाधन' (नदी का पानी) की 'सीमितता' और उसके 'उपयोग' को लेकर अलग-अलग राज्यों की 'ज़रूरतें' और 'दावे' होते हैं। दोनों ही राज्य अपनी जनता के

लिए पानी को 'जीवन का आधार' मानते हैं और उस पर अपना हक़ जमाना चाहते हैं, जिससे हितों में टकराव होता है।

» संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन

प्रश्न 45 (आसान). क्या संघर्ष हमेशा हिंसात्मक होता है?
उत्तर – नहीं, संघर्ष विचारों का टकराव या अपने अधिकारों की मांग भी हो सकता है, जो शांतिपूर्ण तरीकों से भी हो सकता है।

प्रश्न 46 (आसान). क्या संघर्ष समाज के लिए हमेशा बुरा होता है?
उत्तर – नहीं, संघर्ष सामाजिक परिवर्तन का कारण बन सकता है और समाज को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

प्रश्न 47 (मध्यम). आपकी नज़र में, लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए किया गया संघर्ष कैसे सामाजिक परिवर्तन लाता है?
उत्तर – जब लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं (जैसे शिक्षा, काम का अधिकार), तो सरकार को उनकी मांगें माननी पड़ती हैं, जिससे कानून और नीतियों में बदलाव आते हैं, जो अंततः समाज को बदलते हैं।

प्रश्न 48 (कठिन). बताएं कि कैसे 'पुराने' और 'नए' के बीच का संघर्ष विकासशील देशों के 'सामाजिक विकास' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
उत्तर – विकासशील देशों में 'पुराने' सामाजिक संरचनाएं और 'नए' आर्थिक-राजनीतिक विचार हमेशा टकराते रहते हैं। यह संघर्ष नई सोच, आधुनिक संस्थानों और प्रगतिशील नीतियों को जन्म देता है, जिससे देश का सामाजिक विकास होता है, भले ही इसमें कुछ शुरुआती चुनौतियाँ हों।

» अप्रत्यक्ष संघर्ष और बलात् सहयोग

प्रश्न 49 (आसान). क्या 'अप्रत्यक्ष संघर्ष' में लोग हमेशा एक-दूसरे से खुलकर लड़ते हैं?
उत्तर – नहीं, अप्रत्यक्ष संघर्ष में लोग खुलकर नहीं लड़ते, बल्कि असंतोष अंदरूनी होता है।

प्रश्न 50 (आसान). 'बलात् सहयोग' में व्यक्ति अपनी इच्छा से सहयोग करता है या मजबूरी में?
उत्तर – बलात् सहयोग में व्यक्ति मजबूरी में सहयोग करता है।

प्रश्न 51 (मध्यम). अगर एक परिवार में बच्चे अपने माँ-बाप की पसंद की पढ़ाई करने पर मजबूर होते हैं, भले ही वे कुछ और करना चाहते हों, तो यह किस तरह के 'सहयोग' का उदाहरण है?
उत्तर – यह 'बलात् सहयोग' का उदाहरण है।

प्रश्न 52 (कठिन). एक गाँव में एक 'शक्तिशाली ज़मींदार' है। गाँव के गरीब मज़दूर जानते हैं कि उन्हें 'कम मज़दूरी' मिल रही है, पर वे ज़मींदार के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते क्योंकि उन्हें काम खोने का डर है। यह किस प्रकार के 'संघर्ष' और 'सहयोग' को दर्शाता है, और क्यों?
उत्तर – यह 'अप्रत्यक्ष संघर्ष' है क्योंकि मज़दूरों के हितों और ज़मींदार के हितों में टकराव है, पर वे 'मुखर विरोध' नहीं कर रहे। साथ ही, यह 'बलात् सहयोग' भी है क्योंकि वे 'डर' के कारण 'कम मज़दूरी' पर भी काम करने को मजबूर हैं ताकि वे भूखे न रहें, और ज़मींदार की 'व्यवस्था' बनी रहे।

» तकनीक, उत्पादन और सहयोग की आवश्यकता

प्रश्न 53 (आसान). अगर एक किसान हल-बैल से खेत जोत रहा है, तो उसे कितने लोगों की मदद की ज़रूरत पड़ सकती है? तकनीक के हिसाब से बताओ।
उत्तर – हल-बैल से खेत जोतने में कम तकनीक इस्तेमाल होती है, इसलिए उसे अक्सर दूसरे किसानों या मजदूरों की मदद की ज़रूरत पड़ेगी।

प्रश्न 54 (आसान). ट्रैक्टर से खेत जोतने पर सहयोग की आवश्यकता पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – ट्रैक्टर एक उन्नत तकनीक है, इससे खेत जोतने में आमतौर पर कम लोगों की ज़रूरत पड़ेगी, जिससे सहयोग की आवश्यकता कम होगी।

प्रश्न 55 (मध्यम). आपके गाँव में सड़क बनाने के लिए पहले लोग फावड़े और टोकरियों से काम करते थे। अब जेसीबी मशीन आ गई है। इससे सहयोग के पैटर्न में क्या बदलाव आया होगा?

उत्तर – जब लोग फावड़े और टोकरियों से काम करते थे, तब उन्हें एक-दूसरे से ज़्यादा सहयोग करना पड़ता था, जैसे मिट्टी उठाना और फेंकना। जेसीबी मशीन आने से कम लोग मिलकर ज़्यादा काम कर पाते हैं, जिससे सीधे मानव-मानव सहयोग की ज़रूरत कम हो गई है।

प्रश्न 56 (कठिन). सोचो, एक गाँव में पहले एक ही डॉक्टर था और वह कई दूसरे डॉक्टर्स से सलाह लेता था। अब वहाँ एक बड़ा अस्पताल बन गया है, जिसमें अलग-अलग बीमारियों के लिए अलग-अलग मशीनें और विशेषज्ञ डॉक्टर हैं। क्या इससे डॉक्टर्स के बीच 'सहयोग की आवश्यकता' पर कोई असर पड़ा होगा? समझाओ।

उत्तर – हाँ, असर पड़ा होगा। पहले एक डॉक्टर को ज़्यादा सलाह लेने के लिए दूसरे डॉक्टरों से सीधा संपर्क और सहयोग करना पड़ता था। अब बड़े अस्पताल में विशेषज्ञ डॉक्टर और उन्नत मशीनों के कारण एक ही अस्पताल में अलग-अलग विभागों में विशेषीकृत सहयोग होता है, लेकिन पहले जैसी सीधी 'दूसरे शहर के डॉक्टर से सलाह' वाली ज़रूरत कम हो जाती है। यह भी तकनीक (बेहतर उपकरण) और पूंजी (बड़े अस्पताल का निर्माण) का ही प्रभाव है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. सोचिए, आपके गाँव में एक नया सरकारी स्कूल खुलने वाला है। यह सामाजिक संरचना और स्तरीकरण को कैसे प्रभावित कर सकता है?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि अभी गाँव की मौजूदा 'सामाजिक संरचना' क्या है - यानी कौन-कौन से वर्ग, जातियाँ, और परिवार हैं, और उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति क्या है।

› फिर, 'सामाजिक स्तरीकरण' को देखेंगे - शिक्षा के अवसरों तक किसकी पहुँच ज्यादा है और किसकी कम।

› अब, जब नया सरकारी स्कूल खुलेगा, तो यह उन बच्चों को शिक्षा का अवसर देगा जिनके पास पहले यह सुविधा नहीं थी। इससे उनकी 'सामाजिक स्थिति' में सुधार हो सकता है।

› धीरे-धीरे, जब ये बच्चे पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगे, तो वे अपने परिवारों की 'आर्थिक स्थिति' को भी सुधारेंगे।

› इससे गाँव के 'सामाजिक स्तरीकरण' में बदलाव आ सकता है, जहाँ शिक्षा के कारण लोगों की स्थिति ऊपर उठ सकती है।

उत्तर – नया सरकारी स्कूल गाँव में शिक्षा के असमान वितरण को कम करके सामाजिक स्तरीकरण को प्रभावित करेगा, जिससे वंचित वर्ग के बच्चों को ऊपर उठने के अवसर मिलेंगे और धीरे-धीरे सामाजिक संरचना में सकारात्मक बदलाव आएगा।

उदाहरण 2. भारतीय समाज में 'जाति व्यवस्था' व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित करती है, और व्यक्ति इस व्यवस्था में कैसे बदलाव ला सकता है?

› पहला कदम: 'जाति व्यवस्था' को एक 'social structure' के रूप में समझो। यह सदियों से चली आ रही एक व्यवस्था है जो व्यक्ति की पहचान, काम, और शादी-विवाह जैसी चीज़ों को 'restrict' करती थी।

› दूसरा कदम: यह देखो कि जाति व्यवस्था ने व्यक्ति पर क्या-क्या 'obligations' या 'constraints' डालीं। जैसे, 'inter-caste marriage' करना मुश्कलि था, या कुछ खास 'occupations' ही करने पड़ते थे।

› तीसरा कदम: अब सोचो कि व्यक्ति ने कैसे इस व्यवस्था को चुनौती दी। जैसे, समाज सुधारकों ने 'social reforms' लाए, 'education' को बढ़ावा दिया, और 'inter-caste marriages' को बढ़ावा देकर इस 'structure' को बदलने की कोशिश की।

› चौथा कदम: आज के समय में भी, लोग अपनी 'identity' को जाति से ऊपर रखकर, या 'caste-based discrimination' के खलिाफ आवाज़ उठाकर, इस व्यवस्था को 'transform' कर रहे हैं।

› निष्कर्ष: इससे पता चलता है कि जाति व्यवस्था (समाज) ने व्यक्ति को बहुत प्रभावित किया, पर व्यक्ति ने भी अपनी 'agency' और 'creativity' से इसमें 'significant changes' लाए।

उत्तर – जाति व्यवस्था ने व्यक्ति के जीवन को पहचान, विवाह और पेशे के स्तर पर प्रभावित किया (बाध्यता), परंतु व्यक्ति ने शिक्षा, सामाजिक सुधारों और अंतरजातीय विवाहों के माध्यम से इस व्यवस्था में परिवर्तन लाए (सृजनात्मकता)।

उदाहरण 3. एक परिवार की सामाजिक संरचना को समझाइए।

› पहला कदम: पहचान करें कि परिवार के सदस्य कौन हैं और उनके बीच मुख्य संबंध क्या हैं। (जैसे माता-पिता, बच्चे, दादा-दादी)

› दूसरा कदम: परिवार के भीतर होने वाली नियमित क्रियाओं और व्यवहारों को देखें। (जैसे सुबह साथ खाना, बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना, त्योहार साथ मनाना)

› तीसरा कदम: ये क्रियाएं और संबंध कैसे 'दोहराई जाने वाली नियमितताएँ' बनाते हैं, इसे स्पष्ट करें। (जैसे हर दिन का एक रूटीन, पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले रीति-रिवाज)

› चौथा कदम: समझाएं कि कैसे ये नियमितताएं मिलकर 'संस्था' के रूप में परिवार को मजबूत करती हैं और एक विशेष आकार देती हैं। (जैसे शादी के नियम, बच्चों की परवरिश का तरीका)।

उत्तर – एक परिवार की सामाजिक संरचना उसके सदस्यों के बीच के स्थायी संबंधों (जैसे माता-पिता और बच्चों का रिश्ता) और लगातार दोहराई जाने वाली क्रियाओं (जैसे सुबह एक साथ नाश्ता करना, त्योहार मनाना) से बनती है। ये नियमितताएं परिवार को एक मजबूत संस्था का रूप देती हैं, जो नई पीढ़ियों को भी उन नियमों और व्यवहारों से परिचित कराती है।

उदाहरण 4. दुर्खीम और मार्क्स के सामाजिक संरचना पर विचारों के बीच मुख्य अंतर क्या है?

› पहले दुर्खीम के विचार को समझें: दुर्खीम कहते हैं कि समाज व्यक्ति पर 'सामाजिक प्रतिबंध' लगाता है। यह समाज 'व्यक्ति से परे' और 'बाह्य' होता है, जो हमारी क्रियाओं को नियंत्रित करता है। इसे 'social fact' भी कहा जाता है।

› फिर मार्क्स के विचार को समझें: मार्क्स मानते हैं कि मनुष्य इतिहास बनाते हैं, यानी वे संरचना को बदल सकते हैं। लेकिन यह इतिहास निर्माण उनकी 'अपनी पसंद की शर्तों पर' नहीं होता, बल्कि 'ऐतिहासिक-संरचनात्मक बाध्यताओं' के भीतर होता है। वे आर्थिक संरचना पर अधिक जोर देते हैं।

› दोनों के अंतर को स्पष्ट करें: दुर्खीम के लिए समाज की शक्ति बाहरी है और वह व्यक्ति को नियंत्रित करती है, जबकि मार्क्स मानते हैं कि मनुष्य संरचना को बदल सकता है, लेकिन वह उन बाध्यताओं से पूरी तरह मुक्त नहीं होता जो उसे विरासत में मिली हैं या उस समय मौजूद हैं।

उत्तर – दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक संरचना व्यक्ति पर 'बाह्य सामाजिक प्रतिबंध' लगाती है, जबकि मार्क्स मानते हैं कि मनुष्य इतिहास तो बनाते हैं, पर 'ऐतिहासिक-संरचनात्मक बाध्यताओं' के भीतर ही, खासकर आर्थिक ढांचे से प्रभावित होकर। दुर्खीम नियंत्रण पर और मार्क्स परिवर्तन की संभावना पर अधिक जोर देते हैं, भले ही वह सीमाओं के भीतर हो।

उदाहरण 5. एक ऐसे समाज में, जहाँ आर्थिक संसाधनों तक पहुँच असमान है, 'जीवन अवसर' (life chances) कैसे प्रभावित होते हैं?

› पहले 'जीवन अवसर' का मतलब समझो: इसका मतलब सिर्फ़ पैसा नहीं, बल्कि अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, सुरक्षित नौकरी और मनोरंजन जैसी सभी भौतिक सुविधाएँ हैं जो जीवन की गुणवत्ता सुधारती हैं।

› अब सोचो अगर किसी समूह के पास 'आर्थिक संसाधन' (जैसे पैसा, संपत्ति) कम हैं, तो क्या होगा?

› कम आर्थिक संसाधनों का मतलब है कि वे अच्छी 'स्कूल फ़ीस' नहीं दे पाएँगे, 'महँगे अस्पताल' नहीं जा पाएँगे, या 'अच्छी ट्रेनिंग' नहीं ले पाएँगे।

› इन सबकी वजह से उन्हें 'बेहतर नौकरी' मिलने की संभावना कम हो जाती है, जिससे उनका 'स्वास्थ्य' और 'मनोरंजन' भी प्रभावित होता है।

› तो, आर्थिक असमानता सीधे तौर पर 'जीवन अवसरों' को सीमित कर देती है, जिससे समाज में स्तरीकरण और गहरा होता है।

उत्तर – आर्थिक संसाधनों तक असमान पहुँच 'जीवन अवसरों' को गंभीर रूप से प्रभावित करती है, जिससे व्यक्तियों और समूहों को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और समग्र जीवन गुणवत्ता प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक गाँव में दो बच्चे हैं, राम और श्याम। राम का परिवार अमीर है और गाँव के मुखिया से उनके अच्छे संबंध हैं। श्याम का परिवार गरीब है। बताइए, 'जीवन अवसर', 'सामाजिक प्रस्थिति' और 'राजनैतिक प्रभाव' के संदर्भ में किसे ज़्यादा लाभ मिलेंगे?

› स्टेप 1: राम को अमीर परिवार से होने के कारण 'जीवन अवसर' (life chances) बेहतर मिलेंगे। उसे अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और पोषण मिल सकता है।

› स्टेप 2: मुखिया के परिवार से संबंध होने के कारण राम और उसके परिवार को गाँव में ज़्यादा 'सामाजिक प्रस्थिति' (social status) और मान-सम्मान मलिगा।

› स्टेप 3: राम का परिवार मुखिया के करीब होने के कारण गाँव के फैसलों पर 'राजनैतिक प्रभाव' (political influence) भी डाल सकता है, जिससे उनके फायदे वाले निर्णय हो सकते हैं।

› स्टेप 4: इसके विपरीत, श्याम को ये तीनों लाभ कम या बिल्कुल नहीं मिलेंगे, क्योंकि वह गरीब परिवार से है और उसके पास कोई खास पहुंच नहीं है।

उत्तर – राम को श्याम की तुलना में तीनों प्रकार के लाभ - जीवन अवसर, सामाजिक प्रस्थिति और राजनैतिक प्रभाव - अधिक मिलेंगे।

उदाहरण 7. एक गाँव में बहुत से बच्चे स्कूल बीच में ही छोड़ देते हैं। इसे सामान्य ज्ञान और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से कैसे समझेंगे?

› **सामान्य ज्ञान का नज़रिया:** 'ये बच्चे पढ़ने में कमज़ोर हैं', या 'इन्हें पढ़ाई का महत्व नहीं पता', या 'इनके माता-पिता ध्यान नहीं देते।'

› **समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का नज़रिया:** यहाँ हम व्यक्तिगत कमियों के बजाय 'सामाजिक संरचना' पर ध्यान देंगे। हम पूछेंगे: 'क्या गाँव में स्कूल दूर है?' 'क्या वहाँ पर्याप्त और अच्छे शिक्षक हैं?' 'क्या बच्चों को घर पर काम करना पड़ता है क्योंकि परिवार गरीब है?' 'क्या लड़कियों को घर के काम के लिए स्कूल छोड़ने को कहा जाता है?' 'क्या शिक्षा की गुणवत्ता इतनी खराब है कि बच्चे रुचि खो देते हैं?'

› हम देखेंगे कि 'गरीबी', 'लैंगिक भेदभाव', 'शिक्षा व्यवस्था की कमी' जैसे बड़े सामाजिक कारण बच्चों के स्कूल छोड़ने में भूमिका निभाते हैं, न कि सिर्फ़ उनकी व्यक्तिगत इच्छा।

› इस तरह, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य हमें समस्या की जड़ तक ले जाता है, जो सिर्फ़ व्यक्तिगत स्तर पर नहीं होती बल्कि समाज की बनावट में छुपी होती है।

उत्तर – सामान्य ज्ञान व्यक्तिगत स्तर पर दोषारोपण करता है, जबकि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य सामाजिक संरचनात्मक कारणों की पड़ताल करता है जैसे गरीबी, लैंगिक भेदभाव, और शिक्षा प्रणाली की कमियाँ।

उदाहरण 8. दुर्खीम के अनुसार, एक सॉफ्टवेयर कंपनी में जहाँ अलग-अलग टीमें (जैसे, डेवलपमेंट, टेस्टिंग, डिजाइन) अपना-अपना काम करती हैं, वहाँ किस प्रकार की एकता पाई जाएगी? समझाएँ।

› पहला कदम: पहचान करें कि कंपनी में 'श्रम विभाजन' का स्तर कैसा है। यहाँ विभिन्न टीमें अलग-अलग, विशेषज्ञता वाले कार्य कर रही हैं।

› दूसरा कदम: सोचें कि ये टीमें एक-दूसरे पर कितनी निर्भर हैं। डेवलपमेंट टीम बिना डिजाइन टीम के काम नहीं कर सकती, और टेस्टिंग टीम के बिना सॉफ्टवेयर सफल नहीं होगा।

› तीसरा कदम: दुर्खीम के 'यांत्रिक' और 'सावयवी' एकता के सिद्धांतों को लागू करें। 'यांत्रिक एकता' कम श्रम-विभाजन और समानता पर आधारित है, जबकि 'सावयवी एकता' उच्च श्रम-विभाजन और अन्योन्याश्रितता पर।

› चौथा कदम: निष्कर्ष निकालें। क्योंकि सॉफ्टवेयर कंपनी में उच्च 'श्रम विभाजन' है और विभिन्न टीमें 'परस्पर निर्भर' हैं, इसलिए यहाँ 'सावयवी एकता' पाई जाएगी।

उत्तर – दुर्खीम के दृष्टिकोण से, एक सॉफ्टवेयर कंपनी में 'सावयवी एकता' (Organic Solidarity) पाई जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि कंपनी में 'श्रम विभाजन' बहुत स्पष्ट है, जहाँ डेवलपमेंट, टेस्टिंग और डिजाइन जैसी अलग-अलग टीमें विशिष्ट कार्य करती हैं। ये टीमें अपने-अपने क्षेत्र में 'विशेषज्ञ' होती हैं और कंपनी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 'एक-दूसरे पर निर्भर' करती हैं। किसी एक टीम के बिना दूसरे का काम अधूरा रह जाएगा, जो 'सावयवी एकता' की पहचान है।

उदाहरण 9. कार्ल मार्क्स के अनुसार, एक फैक्ट्री में काम करने वाला मज़दूर अपने बनाए हुए उत्पाद से 'alienated' क्यों महसूस करता है?

› पहला, मार्क्स कहते हैं कि 'production' का मतलब सिर्फ चीज़ें बनाना नहीं है, बल्कि 'humans expressing their creativity' भी है।

› दूसरा, एक फैक्ट्री में मज़दूर सिर्फ 'part of a larger process' होता है। उसे पता नहीं होता कि 'final product' क्या है या उसका 'purpose' क्या है।

› तीसरा, 'he does not own the means of production'–यानी फैक्ट्री या मशीनें उसकी नहीं होतीं, और 'he does not own the product he creates'–जो चीज़ वो बनाता है, वो भी उसकी नहीं होती।

› चौथा, उसका काम 'repetitive and monotonous' होता है, उसमें उसकी 'creativity' या 'personal skill' का इस्तेमाल नहीं होता।

› पाँचवाँ, इन सभी कारणों से, मज़दूर को अपने श्रम से, अपने उत्पाद से, अपने साथी मज़दूरों से, और अपनी 'human essence' से 'separated' महसूस होता है, इसी को 'alienation' कहते हैं।

उत्तर – मज़दूर को अपने बनाए उत्पाद से अलगाव इसलिए महसूस होता है क्योंकि उसका उस उत्पाद पर कोई स्वामित्व नहीं होता, उसके बनाने की प्रक्रिया पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता, और वह अपने श्रम में अपनी रचनात्मकता या मानव सार को व्यक्त नहीं कर पाता।

उदाहरण 10. समाजशास्त्र के अनुसार, प्रतियोगिता को 'स्वाभाविक वृत्ति' के बजाय 'सामाजिक तत्व' क्यों माना जाता है?

› पहला कदम, हम यह समझेंगे कि 'स्वाभाविक वृत्ति' का मतलब है जो जन्म से हो, प्रकृति से मिली हो, जिस पर समाज का कोई असर न हो।

› दूसरा कदम, 'सामाजिक तत्व' का मतलब है जो समाज के साथ विकसित हुआ हो, समाज की संरचना और प्रक्रियाओं से प्रभावित हो।

› तीसरा कदम, समाजशास्त्र कहता है कि 'competition' हमेशा से हर समाज में इतनी प्रबल नहीं थी। जैसे पुराने समाजों में 'cooperation' ज़्यादा महत्वपूर्ण था।

› चौथा कदम, 'Competition' ज़्यादा प्रमुख तब हुई जब 'modern capitalist societies' बने, जहाँ 'efficiency' और 'profit' पर बहुत ज़ोर दिया गया। इस 'new economic system' ने लोगों को एक-दूसरे से 'compete' करने के लिए प्रेरित किया।

› पांचवां कदम, इसलिए, यह हमारे स्वभाव का 'inherent' हिस्सा नहीं, बल्कि समाज के विकास के साथ उभरी एक 'socially constructed' चीज़ है।

उत्तर – प्रतियोगिता को स्वाभाविक वृत्ति नहीं बल्कि सामाजिक तत्व माना जाता है क्योंकि इसका विकास आधुनिक पूंजीवादी समाजों में व्यक्तिवाद और कार्यकुशलता पर जोर देने के साथ हुआ है, जो दर्शाता है कि यह सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है, जन्मजात नहीं।

उदाहरण 11. सोहन एक छोटा सा किराना स्टोर चलाता है। उसने देखा कि उसके पड़ोस में एक बड़ी कंपनी का सुपरमार्केट खुल गया है। सुपरमार्केट कम दाम पर ज़्यादा सामान बेच रहा है। सोहन इस स्थिति में 'पूंजीवाद और प्रतियोगिता की विचारधारा' के अनुसार कैसे प्रतिक्रिया देगा?

› सबसे पहले, सोहन यह समझेगा कि बड़ी कंपनी 'श्रम विभाजन' और 'विशेषीकरण' के कारण 'अधिक उत्पादकता' हासिल कर रही है, जिससे वह कम दामों पर बेच पा रही है।

› प्रतियोगिता की विचारधारा के अनुसार, सोहन को भी अपनी 'कार्यकुशलता' बढ़ानी होगी। उसे 'बेहतर ग्राहक सेवा', 'स्थानीय उत्पादों पर ध्यान' या 'होम डिलीवरी' जैसी चीज़ें शुरू करनी होंगी।

› अगर सोहन अपनी कार्यकुशलता नहीं बढ़ाता, तो 'सर्वाधिक कार्यकुशल फर्म बची रहेगी' के नियम के अनुसार, वह बाज़ार से बाहर हो सकता है।

› अंत में, वह या तो 'प्रतियोगिता में बेहतर' होकर टिकेगा, या फिर प्रतियोगिता हार जाएगा।

उत्तर – सोहन को अपनी दुकान को बचाने और आगे बढ़ने के लिए अपनी 'दक्षता' और 'सेवाओं' को 'बेहतर' करना होगा, ताकि वह बड़ी कंपनी से मुकाबला कर सके।

उदाहरण 12. एक गाँव में, ग्राम पंचायत ने फैसला किया कि सार्वजनिक ज़मीन पर एक नया अस्पताल बनाया जाएगा। लेकिन गाँव के कुछ किसान कहते हैं कि उस ज़मीन पर उन्हें खेती करने के लिए मिलना चाहिए। इस स्थिति में 'संघर्ष' के आधार और कारण क्या हैं?

› पहला कदम: हमें देखना होगा कि यहाँ कौन-कौन से 'हित' (interests) टकरा रहे हैं। यहाँ, गाँव के स्वास्थ्य के लिए 'अस्पताल' बनाने का हित है, और किसानों का 'खेती' करने का 'आर्थिक हित' है।

› दूसरा कदम: अब 'संसाधन' (resource) पहचानो। यहाँ, 'सार्वजनिक ज़मीन' ही वह सीमित संसाधन है जिसके लिए टकराव हो रहा है। ज़मीन एक ही है, पर उसके उपयोग को लेकर अलग-अलग विचार हैं।

› तीसरा कदम: 'संघर्ष का आधार' क्या है? यहाँ, यह 'वर्ग' आधारित हो सकता है, जहाँ एक तरफ़ पूरा गाँव स्वास्थ्य सुविधा चाहता है, और दूसरी तरफ़ 'किसान वर्ग' अपनी आजीविका के लिए ज़मीन चाहता है।

› चौथा कदम: 'संघर्ष का कारण' क्या है? ज़मीन की 'सीमितता' और उसके 'उपयोग' को लेकर 'अलग-अलग हित' ही इस संघर्ष के मुख्य कारण हैं।

उत्तर – इस संघर्ष का आधार 'वर्ग-हित' (गाँव बनाम किसान) और 'संसाधनों का उपयोग' है, और इसका मुख्य कारण 'सीमित सार्वजनिक ज़मीन' और उस पर अलग-अलग हितों का टकराव है।

उदाहरण 13. भारतीय समाज में 'नए और पुराने के बीच संघर्ष' का एक उदाहरण देते हुए बताएं कि यह किस प्रकार 'सामाजिक परिवर्तन' से संबंधित है।

› पहचानें कि 'नया' और 'पुराना' क्या है: उदाहरण के लिए, 'पुराना' यानी जाति-आधारित भेदभाव या लैंगिक असमानता। 'नया' यानी आधुनिक शिक्षा, समानता के मूल्य और लोकतांत्रिक अधिकार।

› संघर्ष को स्पष्ट करें: जब शिक्षित युवा या महिलाएँ अपने अधिकारों की मांग करती हैं और पुराने रीति-रिवाजों को चुनौती देती हैं, तो यह संघर्ष उत्पन्न होता है।

› सामाजिक परिवर्तन से जोड़ें: इस संघर्ष के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे समाज में बदलाव आते हैं। जैसे, 'इंटरकास्ट मैरिज' को स्वीकार करना या महिलाओं को 'काम करने की आज़ादी' देना। यह सब 'सामाजिक परिवर्तन' है जो संघर्ष से ही आता है।

› निष्कर्ष: इस तरह, 'पुराने' नियमों और 'नए' विचारों के बीच का यह संघर्ष ही समाज को 'बदलने' में मदद करता है।

उत्तर – भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव (पुराना) और समानता के अधिकार (नया) के बीच संघर्ष एक स्पष्ट उदाहरण है। जब दलित समुदाय या अन्य पिछड़े वर्ग अपने अधिकारों की मांग करते हैं, तो यह संघर्ष समाज में जातिगत भेदभाव को कम करने और अधिक समान समाज बनाने जैसे सामाजिक परिवर्तन लाता है।

उदाहरण 14. मान लीजिए, एक गाँव में दो भाई अपनी पुश्तैनी ज़मीन के बँटवारे को लेकर असहमत हैं। बड़ा भाई चाहता है कि खेत का बड़ा हिस्सा उसे मिले क्योंकि उसने परिवार के लिए ज़्यादा काम किया है, जबकि छोटा भाई 'बराबर हिस्सेदारी' की मांग कर रहा है। गाँव के सरपंच ने हस्तक्षेप किया और 'पंचायत' में बड़े भाई के पक्ष में फैसला सुनाया। छोटा भाई अंदर ही अंदर बहुत नाराज़ है, पर गाँव की 'सामाजिक व्यवस्था' और 'सरपंच के सम्मान' के कारण उसने सबके सामने कुछ नहीं कहा और फैसला मान लिया। यह किस प्रकार का संघर्ष और सहयोग है?

› यहाँ दो भाइयों के बीच 'हितों का टकराव' है: बड़ा भाई ज़्यादा हिस्सा चाहता है, छोटा भाई बराबर।

› यह टकराव 'सामने से' सीधे लड़ाई-झगड़े में नहीं बदला, क्योंकि छोटे भाई ने 'मुखर विरोध' नहीं किया। अतः यह 'अप्रत्यक्ष संघर्ष' है।

› छोटे भाई ने 'पंचायत' और 'सरपंच के फैसले' का सम्मान करते हुए, अपनी इच्छा न होते हुए भी 'सहयोग' किया, यानी फैसले को मान लिया।

› यह सहयोग 'मजबूरी' में किया गया, 'खुले संघर्ष' से बचने और 'सामाजिक व्यवस्था' बनाए रखने के लिए। अतः यह 'बलात् सहयोग' है।

उत्तर – यह अप्रत्यक्ष संघर्ष और बलात् सहयोग का उदाहरण है।

उदाहरण 15. समझाएं कि कैसे एक छोटी फैक्ट्री में हाथों से जूते बनाने से लेकर बड़ी मशीनों से जूते बनाने की प्रक्रिया में 'तकनीक, उत्पादन और सहयोग की आवश्यकता' बदलती है।

› जब जूते हाथों से बनते थे, तो कारीगरों को एक-दूसरे से बहुत सहयोग करना पड़ता था - कोई चमड़ा काटता था, कोई सिलता था, कोई चिपकाता था। हर कारीगर दूसरे पर निर्भर था।

› इसमें 'तकनीक' कम थी और 'पूँजी निवेश' भी कम होता था।

› अब जब बड़ी मशीनों वाली फैक्ट्री में जूते बनते हैं, तो मशीनें ज़्यादातर काम कर देती हैं। एक मशीन चमड़ा काटती है, दूसरी सिलती है, तीसरी चिपकाती है।

› यहाँ 'तकनीक' और 'पूँजी निवेश' (मशीनों में पैसा लगाना) बहुत ज़्यादा है।

› इस नई प्रक्रिया में सीधे-सीधे कारीगरों के बीच 'सहयोग की आवश्यकता' कम हो गई, क्योंकि काम मशीनों ने ले लिया। हालाँकि, मशीनों को चलाने और उनकी देखरेख के लिए अलग तरह के सहयोग की ज़रूरत पड़ी, लेकिन उत्पादन के मुख्य काम में मानव सहयोग कम हुआ।

उत्तर – हाथ से जूते बनाने में कम तकनीक और कम पूंजी के कारण कारीगरों में सीधा, अधिक सहयोग था। बड़ी मशीनों वाली फैक्ट्री में ज़्यादा तकनीक और पूंजी निवेश के कारण उत्पादन के मुख्य चरणों में मानव सहयोग की आवश्यकता कम हो गई।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• सामाजिक संरचना की प्रकृति पर सीधा प्रश्न आ सकता है, इसलिए 'क्रमवार, नियमित, मानवीय क्रियाओं तथा संबंधों से निर्मित, दोहराई जाने वाली नियमितताएँ' जैसे मुख्य बिंदुओं को याद रखना और उदाहरणों के साथ समझाना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। दुर्खीम के 'सामाजिक प्रतिबंध' और मार्क्स की 'ऐतिहासिक-संरचनात्मक बाध्यता' के बीच के अंतर को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने का अभ्यास ज़रूर करें। अक्सर इन पर तुलनात्मक प्रश्न आते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'सामाजिक स्तरीकरण' को परिभाषित करने और इसके आयामों (जैसे वर्ग, जाति, लिंग) को उदाहरण सहित समझाने का सवाल आता है।

• दुर्खीम के 'यांत्रिक' और 'सावयवी' एकता के बीच अंतर और 'श्रम विभाजन' की भूमिका पर प्रश्न अक्सर आते हैं। उदाहरणों के साथ स्पष्टीकरण दें।

• यह अवधारणा अक्सर 'सहयोग' और 'संघर्ष' से जोड़कर पूछी जाती है, इसलिए इन तीनों के बीच के संबंधों को अच्छे से समझना।

• संघर्ष के विभिन्न आधारों को याद रखना और उनके उदाहरणों के साथ समझाना बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक दिला सकता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'संघर्ष और परिवर्तन का संबंध' या 'लोकतांत्रिक अधिकारों पर दावे से उत्पन्न संघर्ष' जैसे प्रश्न आते हैं। इसे ध्यान से समझना।

एक नज़र में रिवीज़न

› समाज संरचनात्मक: क्रमवार, नियमित, मानवीय क्रियाओं से निर्मित संस्थाएँ।

› दुर्खीम: सामाजिक प्रतिबंध; मार्क्स: इतिहास बनाना, पर बाध्यताओं में।

› सामाजिक स्तरीकरण: समूहों में संरचनात्मक असमानताएँ, भौतिक/प्रतीकात्मक पुरस्कारों की पहुँच, पीढ़ी दर पीढ़ी।

› दुर्खीम: यांत्रिक एकता (समानता) और सावयवी एकता (श्रम-विभाजन, निर्भरता)।

› प्रतियोगिता स्वाभाविक नहीं, पूंजीवादी समाज का सामाजिक तत्व है।

› संघर्ष = हितों में टकराव, सीमित संसाधनों के कारण, वर्ग/जाति/लिंग आदि आधारों पर।

› संघर्ष सामाजिक विकास का अभिन्न अंग, रूपों में बदलाव, परिवर्तन लाता है।